अपने महान स्वरूप को पहचानिए

दौलत राम सहगल
आशुलिपिक

भूमि मेरी माता है और मैं पृथ्वी का पुत्र हूँ। मनुष्य होने के कारण समस्त भूमण्डल मेरा आवास है और सारा संसार मेरा परिवार है मैं महान हूँ, मनुष्य शरीर बढ़े भाग्य से मिला है। चूँकि मैं मनुष्य हूँ, इसलिए समस्त सद्गुण मेरे साथी एवं सहयोगी है। प्रत्येक व्यक्ति का मस्तिष्क उसी एक महान मस्तिष्क का द्वार है, एक ही मस्तिष्क की शक्ति प्रत्येक व्यक्ति के मस्तिष्क में समान रूप में व्याप्त है। यदि मनुष्य उस महान मस्तिष्क रूपी भवन में प्रवेश कर जाए, तब फिर वह उस वृहद् मस्तिष्क का स्वामी बन जाए। अपने व्यक्तिगत मस्तिष्क का मोह ही बन्धन अथवा परतंत्रता है। विराट मस्तिष्क की प्राप्ति मोक्ष, मुक्ति अथवा स्वतन्त्रता है। कितना भी छोटा आदमी क्यों न हो, उसे कभी मनुष्य से हीन मत समझना। यही समझना कि वह महान मानव जाति का एक घटक है। किसी विशिष्ट जाति,कौम या राष्ट्र या देश का है, ऐसा कभी मत सोचना।

प्रकृति के नियम यह सिद्ध करते हैं कि वृहद् मस्तिष्क को व्यक्ति मस्तिष्क द्वारा समझा जा सकता है क्योंकि हमारे जीवन का प्रत्येक क्षण प्रति पल व्यतीत होने वाली शताब्दियों के साथ सम्बद्ध रहता आया है। क्षण और पल मिलकर मिनट बनते हैं, मिनट मिलकर घण्टे और घण्टे दिन, दिन वर्ष और वर्ष शताब्दी बनते हैं। मैं जिस वायु मे श्वांस लेता हूँ, वह प्रकृति के महाआलय से प्राप्त होती है, मैं जिस प्रकाश में देखता हूँ, उसका स्रोत शतसहस्र मीलों की दूरी पर स्थित है,मेरे शरीर का सन्तुलन विश्व में कार्यरत अनेक केन्द्रगत एवं परिधिगत शक्तियों के पारस्परिक सन्तुलन का परिणाम है। हमारे मन में जो विचार उत्पन्न हो, हम उन पर विश्वास करें, और आश्वस्त हों कि जो विचार हमारे लिए व्यक्तिगत रूप से सत्य एंव कल्याणकारी हैं, वे मनुष्य मात्र के लिए सत्य एवं कल्याणकारी होने ही चाहिए। अपने आन्तरिक विश्वास को प्रकट करके तो देखिए, वह विश्व-मानव का विश्वास बन जायेगा। हम भी अपने विचारों को महत्वहीन समझ लेते हैं क्योंकि वे हमारे हैं, परन्तु हमें प्रायःयह देखकर आश्चर्य होता है कि हमारे द्वारा अस्वीकृत विचार एक भिन्न रूप में हमें वापस प्राप्त हो जाते हैं। हम स्मरण रखें कि मनुष्य ठीक उसी परिमाण में महान बनता है, जिस परिमाण में मानव मात्र के लिए श्रम करता है। समाज को कुछ न कुछ नवीन देकर ही हम महान बन सकेंगे।

दुनिया के विचारों के अनुसार रहना आसान है। अपने विचारों के अनुसार एकांत में रहना और भी सरल है, परन्तु महान बनने के लिए हमें अपने विचारों के अनुसार सबके मध्य एकांत में उपलब्ध मधुरता के साथ रहना होगा।अपने पक्ष की इस प्रार्थना में महानता का मूल मंत्र दिया है - भलाई मेरा बाहय रूप है, जय द्वारा मेरे शरीर का निर्माण हुआ है,प्रार्थना मेरे शरीरांग है तथा तप मेरा ह्रदय है, नेकी मेरा मस्तिष्क है तथा संत - स्वभाव प्राण स्वरूप मेरी ऊर्जा है तथा परमतत्व के साथ एकाकार होकर मैं अपने जीवन को सार्थक करूँगा। इस महानता को धारण करने का साहस तो करें, तत्काल महान बन जायेंगे।

***